चूमता है/नीचे चरण तलों में नित सिन्धु झूमता है।' वह तस्वीर, वह चित्र कभी धुंधला नहीं होना चाहिये और किसी को डन्डा लेकर यह बताना भी नहीं चाहिये कि आपको ऐसा ही करना पड़ेगा। भारत का बहुत सजीव चित्र निराला ने 'भारत वन्दना' नामक कविता में चित्रित किया है- जिसमें वो लिखते हैं भारति, जय, विजय करे/कनक शस्य कमल धरे/लंका पदतल-शतदल/गर्जि तोमि सागर जल/धोता शुचि चरण युगल/स्तव कर बहु अर्थ भरे/तरु-तृण, वन-लता-वसन/अंचल में खचित सुमन/गंगा ज्योतिर्जल कण/धवल-धार हार गले/मुकुट शुभ्र हिम तुषार/प्राण प्रणव ओंकार/ध्वनित दिशायें उदार/शतमुख-शतरव-मुखरे। इस कविता में हमें राष्ट्रीय भावनाओं से जोड़ने और ओतप्रोत करने की अकूत शक्ति है।

मेरे मन में हमेशा यह सवाल उठता है कि जो हमें वर्गों, वर्णों, मज़हबों में तथा जातियों में बांटने की कुचेष्टा करते हैं क्या वे राष्ट्रीय हो सकते हैं? आज के नजारे देख-देख कर हम हैरान हैं कि हम कहाँ आ गये हैं और क्या कर रहे हैं। किसी ने कहा था, राष्ट्रीयता एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक भावना है। किसी प्रदेश विशेष के निवासियों की यह भावना और विश्वास है कि वे एक हैं और अपना भविष्य उज्ज्वल करने के लिये उनका दृढ़ संकल्प है। इसका नाम ही राष्ट्रीयता है। जो साहित्य रूपी सरिता से निकल कर मानवता के मैदान को सींचती हुई अनन्त में विलीन हो जाती है। इस वस्तु संसार को बार-बार अजमाने की, विश्लेषित करने की और स्वयं अपने ऊपर लगातार सवाल खड़ा करते हुए जाँचने परखने की भी होनी चाहिये। ताक़त का प्रदर्शन कर, किसी पर जबरिया थोपकर आप राष्ट्रीयता और राष्ट्रशक्ति का परचम लहरा नहीं सकते। यह अन्दरूनी प्रेम है।

राष्ट्रीयता से जुड़े हुए कुछ सवाल हैं तो उसके साथ बिल्कुल खड़े होने वाले शब्दों के कुछ अन्य रूप हैं जिसमें राष्ट्र, राज्य, राष्ट्रीयता के कुछ उद्घोष भी हैं। राष्ट्र के प्रमुख अंगों का उल्लेख वासुदेव शरण अग्रवाल ने किया था। राष्ट्र के हिस्सों में अपनी धरती, अपने लोग, अपनी संस्कृति और अपने द्वारा शासन महत्वपूर्ण होता है। यदि इन तत्वों में से कोई कम होता है तो वहाँ राष्ट्र का स्वरूप बाधित होता है। हमारे देश में राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रप्रेम या देश प्रेम जैसे अनेक शब्द मिलते हैं। सब शब्दों की अपनी-अपनी इयत्ता है। लेकिन राष्ट्रीयता कोई ऊपर से थोपी हुई भावना नहीं हो सकती। आज के दौर में राष्ट्रीयता को अलग-अलग ढंगों से व्याख्यायित एवं विश्लेषित किया जा रहा है। भारत में राष्ट्रीयता का कुछ लोगों की नज़र में मतलब हिन्दुओं के उत्थान मात्र से है जो किसी भी तरह जायज़ नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि भारत की धरती में अनेक धर्मावलम्बी हैं जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, पारसी और अब तो ईसाई, फ्रांसीसी, चीनी, जापानी और विभिन्न देशों के लोग और धर्मावलम्बी रहते हैं। वे यहां पूरी तरह रम गये हैं। जब हम भारत की राष्ट्रीयता की बात करते हैं तो उसका फैलाव और घनत्व और व्याप्ति बहुत बड़ी होती है। उसके अन्तर्गत यहां रहने वाले तमाम सभी प्रकार के लोग छोटे हों या बड़े आर्य हों या अनार्य, आदिवासी हों या वन्यप्राणी या अमीर हो या ग़रीब, पढ़े हो या अनपढ़। अन्यथा एक लम्बे कालखण्ड से यहां बस गये लोग जो कभी बाहर से आये थे। वे सभी शामिल हैं। उन सबका उनकी भाषाओं का उनकी सभ्यताओं का, उनकी संस्कृतियों का पूरी तरह से भारत में विलीन हो जाना या भारत की पहचान से रुबरू हो जाना है। जैसे आप दूध और पानी को अलगा नहीं सकते उसी तरह इन तमाम समूहों को आप अलग-थलग नहीं कर सकते। भारतीय संविधान इसको किसी की इजाजत नहीं देता। इस दौर में राष्ट्रीयता की भावना को कहीं झटका ज़रूर लगा है। यह कहां की बात हुई कि जो हमारी बात न माने वह यहां का नहीं है। उसे इस देश में नहीं रहना चाहिये। यह तो एक तरह से सामन्तवादी और तानाशाही रवैया है। यहाँ रहने वाले लोगों का आपसी विश्वास, सौहार्द्र और अपनत्व क्यों क्रमशः कम होता जा रहा है। उनमें क्यों एक प्रकार का डर समा रहा है। हमें इन कारणों की तलाश करने की ज़रूरत है। हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की भावना, वैदिक साहित्य से अब तक बराबर बनी हुई है। हम चाहें तो ऋग्वेद के हवाले से, उपनिषदों के हवाले से या प्राचीन साहित्य से इसके उदाहरण दे सकते हैं। जयशंकर प्रसाद का साहित्य, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कवितायें या निराला का रचना संसार हो या राष्ट्रीयता का विकास करने वाले कवि जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगल सिंह सुमन जैसे लोग थे। अथवा भारतीयता और राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में गद्य की दुनिया हो। निराला जब कहते हैं - जागो फिर एक बार/पशु नहीं वीर तुम/समर शूर क्रूर नहीं/कालचक्र में हो दबे/आज तुम राजकुँवर/समर सरताज/मुक्त हो सदा ही तुम/बाधा विहीन बंध छंद रूप। इसी तरह अन्य रचनाकारों ने भी राष्ट्रीयता को बहुत व्यापक सन्दर्भों में रखने की कोशिश की। राष्ट्रीयता की भावना का विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक हम दूसरे धर्मों, जातियों और सम्प्रदायों और अन्य लोगों को शंका की नज़र से देखेंगे। दूसरों की राष्ट्रभक्ति पर प्रश्नवाचक लगाएंगे। राष्ट्रीयता की दुहाई देने मात्र से राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है। ध्यातव्य है कि राष्ट्रीयता की ओट में हम किसका संरक्षण कर रहे हैं। राष्ट्र-राष्ट्र की माला जपने मात्र से हम राष्ट्र का अमर स्वप्न राष्ट्रीयता और राष्ट्रीयता के विकास की भावना को अंजाम नहीं दे सकते। हमें समूचे सन्दर्भों, प्रसंगों और व्याख्यानों के साथ राष्ट्रीयता की आड़ में अहंकारों